प्रदीप त्रिपाठी द्वारा संपादित 'किसान समस्या' पर केन्द्रित भित्ति पत्रिका का प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने किया लोकार्पण

हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग की भित्ति पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का माननीय प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र, कुलसचिव राजेंद्र प्रसाद मिश्र द्वारा विभागीय शिक्षकों एवं छात्र-शोधार्थियों की उपस्थिति में लोकार्पण किया

गया। इस अंक का संपादन हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य के शोध अध्येता प्रदीप त्रिपाठी ने किया है। यह अंक किसान समस्या पर केंद्रित है। इस अंक में कृषक जीवन की समस्याओं को साहित्य की विविध विधाओं के मार्फ़त रेखांकित

करने की कोशिश की गई है। किसानों को लेकर सरकार का उनके प्रति क्या रवैया रहा है जैसे गंभीर मुद्दों के साथ-साथ

किसान आत्महत्या जैसी विकट समस्याओं को भी इस अंक में प्रमुखता से लाने का प्रयास किया गया है। कृषक समाज में महिलाओं की बहुत ही अहम भूमिका रही है बावजूद इसके उन्हें 'महिला किसान' के रूप में तवज्जो नहीं

मिला, जैसा मिलना चाहिए। साहित्य में भी नायकत्व की भूमिका पुरुष वर्ग तक ही सिमट कर रह गई है, इस अंक में ऐसे कई महत्त्वपूर्ण सवालों से टकराने की कोशिश की गई है। इस पूरे अंक का लिप्यांकन राजीव कुमार ने किया है।

प्रो. मिश्र ने पत्रिका की तारीफ़ हुए कहा कि किसानों की समस्या के सवालों को इस पत्रिका ने बड़े ही बेबाकी से उठाया है। निश्चित रूप से यह एक सराहनीय अंक है। इस अंक में शामिल हैं-

1. शैलेंद्र कुमार शुक्ल -'हिंदी का प्रगतिशील आंदोलन और किसान'
2. कुमार विश्वमंगल-'सरकार के द्वारा पिछड़े किसान'
3. शैलेश कुमार -'मुझे बात यह समझ में आई' (कविता(
4. गजानन कदम -'क्या आत्महत्या करना ही सभी प्रश्नों का हल है?'
5. ध्रुव कुमार -'पूंजी और किसान वर्चस्व बनाम अस्तित्व :'
6. रवीन्द्र यादव -'किसान जीवन का यथार्थ और फाँस'
7. यदुवंश प्रणय -'हिंदी सिनेमा और किसान'
8. भावना मासीवाल -'महिला, किसान क्यों नहीं?
9. रोशन कुमार प्रसाद -'तीन में से घटा तीन' कहानी में कृषक समस्या
10. राजीव कुमार -'गोदान और भारतीय किसान'
11. प्रदीप त्रिपाठी -'खुरदुरे पैर की जमीन' (कविता(

स्केच- रेनू, दीपाली कूजूर, राजीव कुमार